दख्खन का डींगमार सुभेदार बहादुरखां कोकलताश

फिल्म 'शोले' के अंगरेज जेलर की याद ताजा हो जाती है। जो पहले उपहास करता है और फिर फजीहत पाता है।

पेडगाव किल्ला मोहिम

Shrigonda
श्रीगोंदा
Hiradgaon
हिरडगाव
Rahu
राहु
Mandavgan
Pharata
मांडवगण
फरत
Kashti
काष्टी
भीमा नदी
Yavat
यवत
Patas
पाटस
Kurkumbh
कुरकुंभ
Mugal Forces मुगल दल
Supe
सुपे
Maratha Forces मराठा दल
Horces looters घोडे पळवणारे
पेडगाव किल्ला

जिस समय 'शिवाजी महाराज' के सैनिक अपने किले की ओर बढ़ रहे थे, बहादुर खान ने सोचा उन्हें हराने का अभी अवसर है और अपनी सेना के साथ चढ दौड़ पडा। फिर आगे क्या हुआ...?

‘इस शोधकार्य की सीमाएं’

- यह शोध इस आधार पर आधारित है कि यदि आज के सैन्य अधिकारियों को युद्ध के दृष्टिकोण से कमान दी जाती तो वे खोजपूर्ण स्वतंत्रता लेते और समय की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए इस तरह के अभियानों की योजना बनाते और चलाते।
- भारतीय इतिहास में अनेक स्थानों पर ऐतिहासिक लड़ाइयों का विवरण विश्वसनीय साक्ष्यों के अभाव में उपलब्ध नहीं हो पाता है। ऐसे समय में इन अभियानों को उन लड़ाइयों में शामिल लोगों के व्यवहार, शौर्य, साहस, सैन्य प्रबंधन कौशल, उपलब्ध संसाधनों और हथियारों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत किया है।
- इस बात का कोई दावा नहीं है कि घटनाएँ वास्तव में ऐसी ही घटी थीं। किन्तु, युद्ध कैसे हुआ होगा, इसकी संभावना दिखाने का प्रयास किया गया है।

पार्श्वभूमी का आकलन

- ❖जून १६७४ में राज्याभिषेक समारोह के दौरान, शिवाजी महाराज ने दक्षिणी मुगल सूबेदार बहादुर खान को युद्ध की स्थिति से बचने के लिए मुगलसत्ता में प्रवेश करने का प्रस्ताव दिया। संधि में शिवाजी ने औरंगजेब को वचन दिया कि वे १७ दुर्गों का कब्जा मुगल सत्ता को वापस कर देंगे, पुत्र संभाजी राजे पंचहजार मनसब के पद के साथ फिर से मुगल सेना में शामिल हो जाएंगे।
- ❖ उन्होंने आगे उन्हें (महाराज को), दक्षिणी क्षेत्र के एक सेनापति आदि बनाने का प्रस्ताव रखा। औरंगज़ेब से अनुमोदन प्राप्त करने के लिए कलमों ने खुशमिजाज़ बहादुर खान को लुभाया। (मैं स्वयं बीजापुर के आदिलशाह की प्रतिद्वंद्वी शक्ति को समाप्त कर दूंगा, इसलिए मुख्य शत्रु आदिलशाह समाप्त हो जाएगा। इस प्रकार आप भारी सैन्य खर्च बचा लेंगे। यह प्रस्ताव की सामग्री थी।)
- ❖ औरंगजेब को अफगानिस्तान में पठान कबीलों ने प्रताड़ित किया था। वह खुद अप्रैल १६७४ से पेशावर में तैनात था। जैसे-जैसे सत्ता का मुगल केंद्र आगे बढ़ता गया, पत्राचार का समय काफी बढ़ता गया। शिवाजी महाराज ने मुगलों से युद्ध में विघ्न डालने से बचा लिया।
- ❖ उसके पराक्रम से पुर्तगालियों को आश्चर्य होता था। सुलह की संधि अंग्रेजों को व्यापारिक रियायतें देकर की गई थी। अंग्रेजों को जंजीरा सिद्दी के साथ संधि करने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- ❖ इस प्रकार राज्याभिषेक का कार्यक्रम बिना किसी व्यवधान के भव्य तरीके से संपन्न हुआ।

बदली हुई परिस्थितियाँ

- 1675 तक राजनीतिक स्थिति बदल गई थी। औरंगजेब को पठानों के साथ युद्ध छोड़कर दिल्ली लौटना पड़ा।
- महाराज ने मुगलों के मान्यता समझौते पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया।
- अतः मुगल नाराज हो गए और बीजापुर से हाथ मिलाने के लिए बातचीत करने लगे।
- शिवाजी महाराज की सेना ने बरहानपुर तक कूच किया और बहुत सारी संपत्ति अर्जित की। सूरत से धन की वसूली के लिए एक अभियान की योजना बनाई गई थी।
- परन्तु लौटते समय उन्होंने यह सोचकर नाद को छोड़ दिया कि भील आदिवासियों के उपद्रव के कारण लूट का माल स्वराज तक पहुँचाना सम्भव नहीं होगा।

राज्याभिषेक सोहळा

- औरंगजेब को अफगानिस्तान में पठान कबीलों ने सताया था। वह स्वयं अप्रैल 1674 से पेशावर में तैनात था। जैसे ही मुगल शक्ति का केंद्र और दूर चला गया, महाराजा ने राज्याभिषेक समारोह के दौरान खलीता की यात्रा में काफी समय व्यतीत करके युद्ध के व्यवधान को टाल दिया।
- पुर्तगालियों को उनके कौशल से विस्मय में रखा गया था। सुलह की संधि अंग्रेजों को व्यापारिक रियायतें देकर की गई थी। अंग्रेजों को जंजीरा सिद्दी के साथ संधि करने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- राज्याभिषेक का कार्यक्रम भव्य तरीके से आयोजित किया गया।

भारतीय नौसेना का उज्ज्वल भविष्य देखने वाले दूरदर्शी - शिवाजी महाराज

- पद्म दुर्ग राजापुरी के सामने कंस द्वीप पर बनाया गया था। बाद में सुवर्ण दुर्ग, सिंधु दुर्ग, खंडेरी दुर्ग बनाए गए। जैतापुर बंदरगाह में बख्तरबंद और गुरबा जहाज का उत्पादन शुरू।
- बीजापुर राज्य की सीमा के भीतर सागर तट पर फोंडा, अकोला, कारवार थानी पर कब्जा कर लिया गया।

- एक गुरब १५० से ३०० टन की क्षमता के साथ बीच में चौड़ा और सिरों पर पतला होता है। इसके २-३ सिर होते हैं। इसके जरिए एक बार में १५० -२०० सैनिक और नाविक सफर कर सकते हैं।

अरब सागर में तटीय सतर्कता

पद्म दुर्ग को बनाकर जंजीरे का महत्व कम कर दिया गया...

माल, सेना उतारने के लिए पद्म दुर्ग का बंदरगाह...

सिद्दीयों के कब्जे में लिया गया मुरुड जंजीरा...

बीजापुर के आदिलशाही में सत्ता संघर्ष

- ❖ बीजापुर के आदिलशाह के वजीर दक्षिणी मुस्लिम खवासखाना ने अपनी बेटी को बहादुर खान के बेटे को देकर सुलह को आगे बढ़ाया।
- ❖ बीजापुर दरबार में उत्तर में पठानों और दूसरी ओर दक्खनी मुसलमानों और सिद्दी मुसलमानों के बीच सत्ता संघर्ष अपने चरम पर पहुंच गया।
- ❖ पठान नेता बहलोल खान इसे सहन नहीं कर सका, उसने दख्खनी मुस्लिम खवास खान को दावत पर आमंत्रित किया और उसे चाकू से मार डाला। (नवंबर १६७५)
- ❖ उस समय कई अफवाहें थीं कि सितंबर १६७५ में शिवाजी महाराज बहुत बीमार पड़ गए थे। समर्थ रामदास स्वामी ने दवा की व्यवस्था करने और महाराज का स्वास्थ्य ठीक होने के बाद, उन्होंने दक्षिण भारत में दिग्विजय की योजना शुरू की।

पेडगांव के पास वर्तमान धर्मवीर किले पर मुहिम

- उपरोक्त पृष्ठभूमि के विरुद्ध पेडगाँव के किले पर घटना जुलाई १६७५ के आसपास घटित हुई। बहुत ज्यादा स्मार्ट होने की प्रवृत्ति फजीहत की ओर ले जाती है। जैसा शोले में अंग्रेज़ जेलर के साथ हुआ था।
- बहादुर किले के बाहर सदर बाजार में घूमते जासूसों को पता चला कि अरब व्यापारियों ने बहादुर खान को उच्च नस्ल के घोड़े बेचे थे।
- इसका अर्थ है कि किले के मुख्य तिजोरियों में बहुत सारा सामान रखा होगा।
- विभिन्न कीलों से सैनिकों की तैनाती के दौरान, रैयतों द्वारा एकत्रित धन कई खजाने से किले में कहां जमा किया जाता है? भोई और हमालों से मित्रता करने पर राजकोष में ? वे कहाँ छिपे हैं?
- पूरे परकोटे में करीब १ हजार से १२ सौ लोग हैं। वास्तव में जनानखाने में ५०० सिपाही और बाकी मजदूर, व्यापारी, पशु सेवक नौकर हैं। पहरेदारों की संख्या आदि का पता किया गया ।

किले का नक्शा बनाया गया
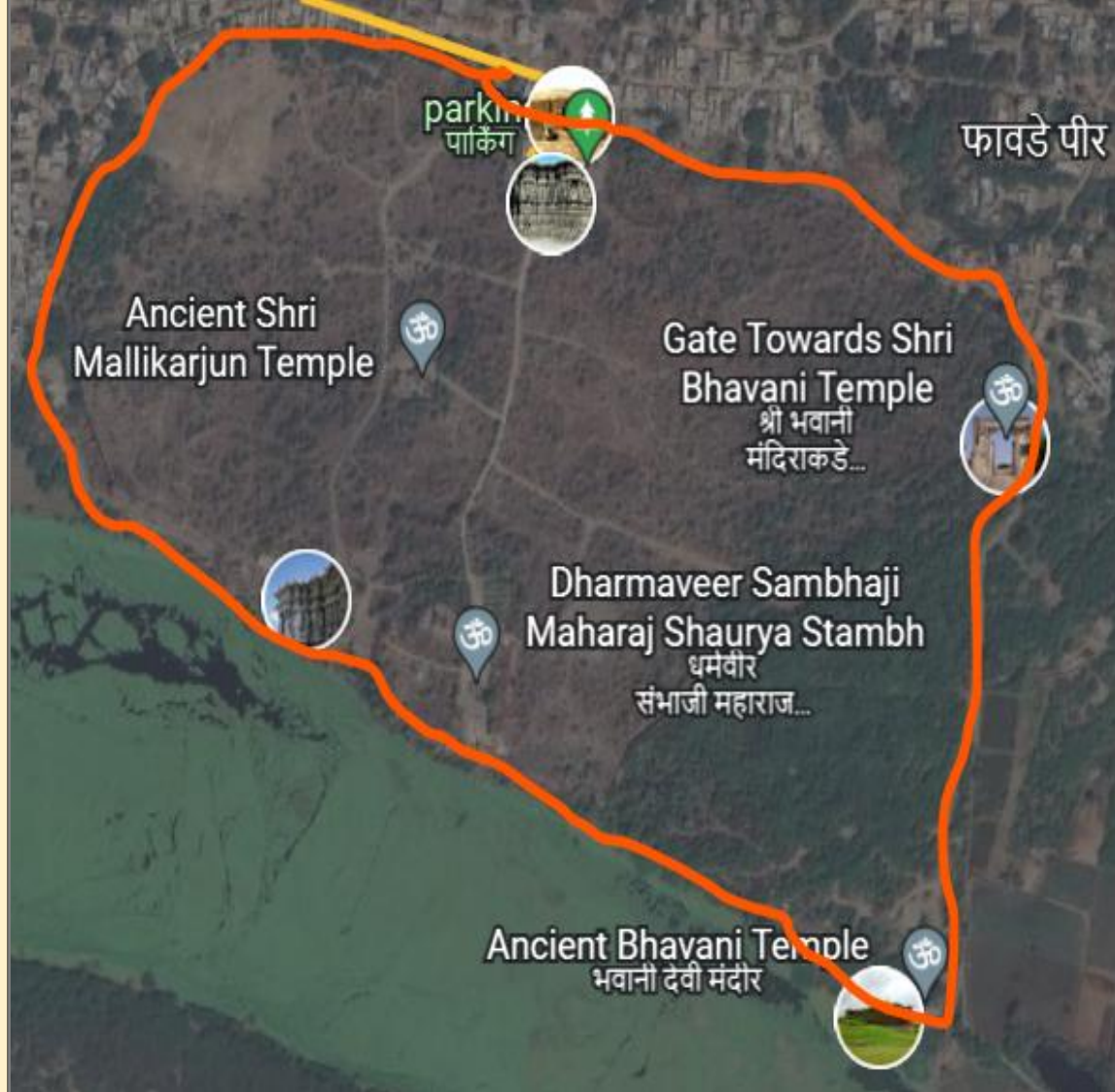
- खबर के अनुसार, पेडगांव इलाके में ७००० सैनिक अलग-अलग सरदारों के तंबू या घरों में रह रहे हैं.
- मानसून के ४ महीने बाद, अभियान के लिए अन्य किलों और गांव के युवाओं की भर्ती करके २० हजार सेना इकट्ठा होती है। अभियान बहुत बड़ा हो तो कई बार गिनती ३० हजार तक भी हो जाता है।
- खबरियों द्वारा प्रदान की गई जानकारी और महाराज के बहादुर किले के बाहर रहने वाले वकीलों द्वारा भेजी गई सूचनाओं का मिलान किया गया। नक्शे बनाए गए।

पिछले दरवाजे पर सैन्य अधिकारियों को दी गई सूचनाएं

किले के नदी किनारे के द्वार सामान्यतः जानवरों और नौकरों के लिए दिन के समय बंद नहीं होते हैं।
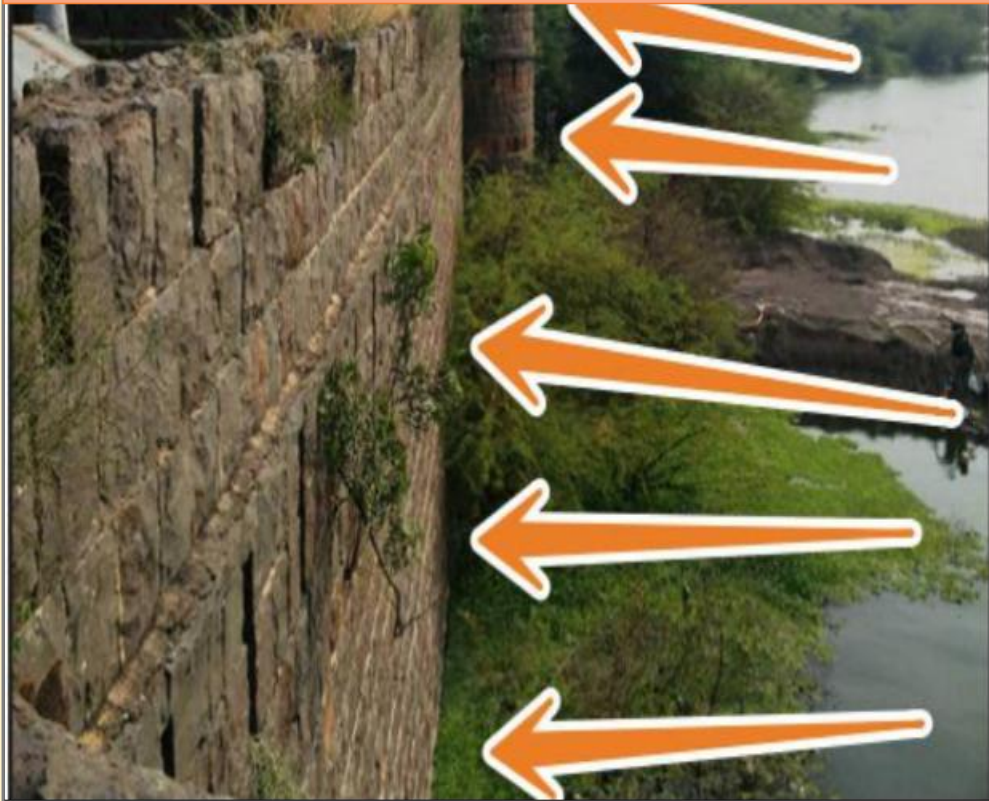
- महाराज ने अभियान की योजना बनाई। जो लोग पहले से ही उस क्षेत्र में रहते थे, उन्होंने भीमा नदी के तल, किले, प्रवेश द्वार, गढ़ों, किलों, शस्त्रागार आदि के चित्र बनाए गए।
- किले के पिछले हिस्से में, मुख्य सेना को कंपनी कमांडर ने नदी के तल से प्रवेश करने की चेतावनी दे दी गई। ३ कंपनियां यानी ५ से ६ सौ सैनिक नए खरीदे गए घोड़ों के अस्तबल पर छापा मारेंगे और अरब के घोड़ों को जब्त कर लेंगे आदि बातें तय की गई.

अरबी घोड़े कहाँ से आए थे? कैसे?

- सभी घोड़े नदी तल से वापस आएंगे और बिना यहां रुके सासवड़ पठार पर भुलेश्वर भेजे जाएंगे।
- एक अन्य तलवारबाज ५ कंपनी कमांडर अपने १००० सैनिकों से घोड़ों को मुक्त कराकर भाग रही ३ कंपनियों को कवर प्रदान करेंगे।
- जब अरबी घोड़ों को मुक्त कर दिया जाय, तो तिजोरियां तोड़ दि जाएंगी और उनमें से नकद थैलियां नदी के पार खड़े घोड़े पर लाद कर यवत के रास्ते सासवड पठार की ओर भेज दिए जाएंगे।

वसई खाड़ी में घोड़े के यातायात के नाम पर बना घोडबंदर
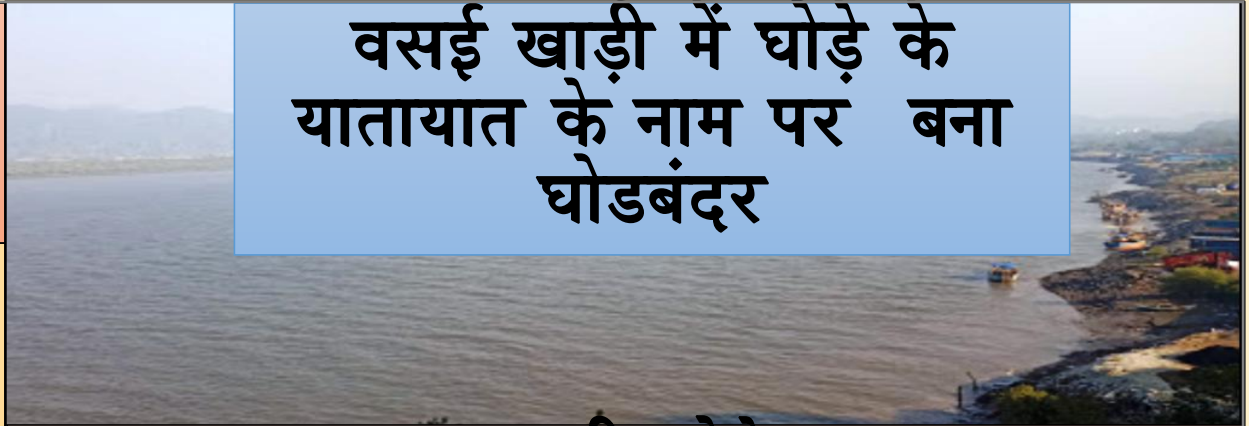
अरबी घोड़े

- अपनी गति, सहनशक्ति, सुंदरता, बुद्धिमानी के लिए कीमती होते थे। 2-3 वर्ष के बछड़ों को अरबस्तान से अफ्रिका के काले हबशी दासों के साथ घोड़बंदर, गोवा, राजापुरी आदि में लाया जाता है।
- स्थानीय बाजार में बेचने के बाद अरब जहाज अन्य सामानों के साथ वापस चले जाते थे। बाद में बछड़ों को प्रशिक्षित कर दिया जाता था और ऊंचे दामों पर बेच दिया जाता था।

औरंगजेब को भारी राजस्व और अरब के घोड़ों को जब्त करने की योजना - 1

- ५ कंपनियां (१ कंपनी का मतलब लगभग १५० से २०० सैनिक) धनुष-बाण लेकर किले के अंदर मार्च करेंगी और किले पर कब्जा कर लेंगी। पत्थरबाज किले के आसपास और खाई के सामने की बस्तियों को जला देंगे और गौशाला में जानवरों पर पत्थर फेंकेंगे। महाराज की आज्ञा के अनुसार हंगामें की स्थिति में भी बालकों तथा स्त्रियों पर आक्रमण नहीं करना चाहिए।
- शिवाजी महाराज की सेना को आते देख पहरेदार किले के दरवाजों को अंदर से बंद कर देंगे। तिजोरी की चाबियां किसी दूर झील या नदी में फेंक दी जाएंगी। ऐसे में कोषागार में जमा नगदी के अलावा दरवाजे और ताले तोड़कर लाये गये घोड़ों पर सोना, जवाहरात, बहुमूल्य उपहार आदि लाद कर सवारों के समूह तीन दल बनाकर दौंड, पाटस, यवत क्षेत्र में बिखेर देना चाहिए।

अर्जित धन को स्वशासन हेतु उपयोग करने की योजना - 2

- यवत गांव के पास भुलेश्वर में सेना रात्रि विश्राम करेगी, फिर सभी कंपनी कमांडर पुरंदर किले पर एकत्रित होंगे।
- प्रत्येक कंपनी कमांडर अपने सौंपे गए कार्य के दौरान होने वाली घटनाओं की एक रिपोर्ट सर सेनापती को प्रस्तुत करेंगे।
- शिवाजी महाराज से मिलने पर, सर सेनापती अरब के घोड़े और कीमती सामान, सिक्कों के बैग, कीमती सामान, रेशमी कपड़े, कपड़े, कीमती गहने, सजावटी हथियार सौंप देंगे..
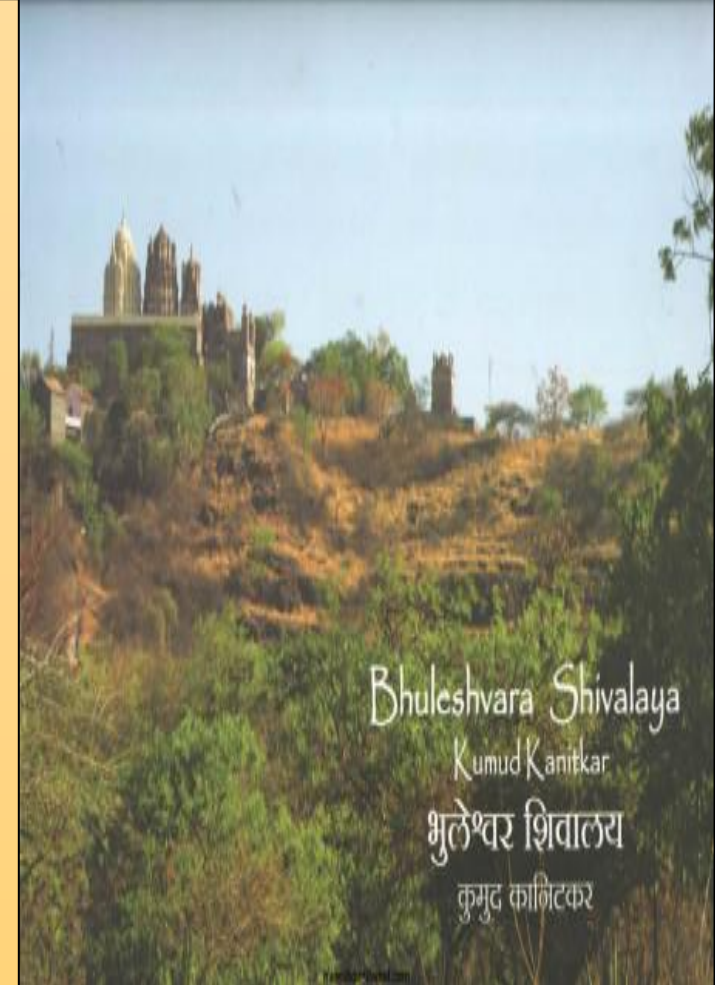
पळपुटेपणाची बतावणी

- ❖ उपरोक्त घटना घटित होने के लिए बिछाया गया जाल ।
- ❖ सर सेनापति हंबीर राव मोहिते की कमान के तहत घुड़सवार सेना (२००० घुड़सवार) की १० कंपनियां श्री गोंदे (वर्तमान नाम) के पास खेत में रात से पहले इकट्ठा होंगी।
- ❖ अगले दिन सूर्योदय से... कार्यक्रम की समयसारणी (वर्तमान घड़ी गणना के अनुसार)
- ❖ ठीक ८ बजे पेडगांव के पास सरसेनापति हंबीर राव अपने पीछे तोपखाना इकाइयों और उनके घुड़सवारों वाली ४ कंपनियां तैयार होंगी।
- ❖ कंपनियां २ और ४ आगे की लाइन से पेडगांव किले पर हमला करने के लिए आगे बढ़ेंगी।किले के सामने के व्यापारी बाजार और बस्ती में शंख, सींग, तुरही और सीटी बजाते थे जैसे कि वे हमला करने जा रहे हों।
- ❖ वे दहशत पैदा करने के लिए शोर और धुआं करना शुरू कर देंगे।

हमले की अनुसूची

सुबह ६ बजे - शंखनाद करने के बाद, कंपनी कमांडर २, १, ३, ४ अपने संबंधित घुड़सवारों को लगभग १० किमी दूर कमांडर-इन-चीफ के पीछे खड़ा कर देंगे।

सुबह ७ बजे से ही तुरही और युद्ध के बैंड अलार्म बजने लगते हैं।

सुबह ८ बजे - कंपनी २ और ४ बहादुरगढ़ समुद्र तट पर हमला करेंगी।

सुबह १० बजे तक मुगल सेना एकत्र हो जाती और आक्रमण करने के लिए किले से बाहर आ जाती। कंपनियों २ और ४ को तब अपनी घुड़सवार सेना को बारी-बारी से दौड़ते हुए देखना चाहिए।

सुबह ११ तक मुगल सेना धीरे-धीरे कंपनी १ और ३ के सामने आ जाएगी। फिर दूसरी और चौथी कंपनियां बाएं और दाएं दिशाओं में भाग जाएंगी।

बहादुर खान से क्या कार्रवाई की उम्मीद थी?

यह किला अब खंडहर हो चुका है और मुगल सूबेदार की राजधानी था, जो तब मवेशियों और सैन्य छावनी से भरा हुआ था।

- ❖ जब किले के प्रभारी और सूबेदार बहादुर खान पर किलों से सैनिकों की आवाजाही का हमला होता है, तो वह अपने सैनिकों को यह तय करने के लिए तैयार होने का आदेश देगा कि क्या करना है।
- ❖ सेना सुबह जल्दी उठती, नाश्ता करती, थोड़ा खाती और घोड़े पर सवार होकर तैयारी करती। किले का मुख्य द्वार खुलते ही वे दुश्मन से लड़ने के लिए निकल पड़ेंगे। इस बीच मराठा अपनी घुड़सवार सेना वापस ले लेंगे और पीछे हट जाएंगे।
- ❖ देखते ही देखते मुग़ल सेना उनके पीछे दौड़ती रहती।

प्रत्यक्ष में, कार्रवाई कैसे हुई?

- ❖ मुख्य सेना, नदी के तल में पीछे छिपी हुई, खुले दरवाजे से प्रवेश किया, जो पीछे के सार्वजनिक कार्यों की ओर जाया करता थी। बहादुर खान की तलाशी ली गई। आज्ञ थी की मिले तो उसे मार दो। लेकिन वह घुड़सवार सेना का नेतृत्व करते हुए किले से बाहर निकल चुका था।
- ❖ वह तुरंत पीछा कर रहा था, मराठा सैनिकों की एक छोटी संख्या को मारकर अपना श्रेय लेने के अवसर की तलाश में था।
- ❖ शाम को सूर्यास्त से पहले अरबी नस्ल के बछड़े, घुड़सवार भुलेश्वर में एकत्र हुए।
- ❖ ११ ते 2 वाजेपर्यंत वेळ मिळाला त्यात १ कोटी रुपये किमतीच्या वेगवेगळ्या चलनाच्या गोण्या लूट करून यवत जवळ भुलेश्वरला परतल्या.
- ❖ जो घुड़सवार भाग गए थे और हताश होकर लौट आए थे, वे किले के बाहर बेचिराग बाजार, मवेशियों के अस्तबल और सड़कें खाली देखकर हैरान रह गए।
- ❖ बहादुर खान के जनानखाने की बेगमों ने रो-रोकर बताया कि कैसे तिजोरियां तोड़ी गईं, कैश बैग कैसे लूटे गए वगैरह-वगैरह।
- ❖ कीमती सजावटी तलवारें, खंजर, सरोपे, कपड़े लूट लिए गए।
- ❖ अस्तबल वाले दौड़ते हुए आए और हमें बताया कि अरबी घोड़ों के अस्तबल हमें तलवारों से धमका कर घोड़े गए हैं। घोड़े डर के मारे भाग खड़े हुए। मौका मिलते ही गुलाम गांव से भागने लगे।
- ❖ या अल्लाह...हम तो लुट गए बरबाद हो गए...

एक व्यर्थ भागदौड़..

❖ डावीकडील १ आणि २ कंपन्या काष्टीवरून पारगावला मुळा-(मुठा) - भीमा नदी संगम पार करून ५० किमी यवतच्या डोंगराकडे पसार झाल्या. हताश होऊन मुगल सैनिक अर्ध्यावाटेतून गडाकडे परतले.

❖ कंपनी १ आणि ३ ने समोरून येणाऱ्या मुगलांच्या सैन्याला अडवून कंपनी २ आणि ४च्या सैन्याला दूर जायला उसंत दिला. नंतर ते ही पळून गेले.

❖ उजवीकडे पळणारे कंपनी ३ व ४ दल हिरडगाव, भावडी डोंगरात चढावर विखरून गेले. मुगलांना ते शोधता येईनात..

खान-ए-जहां बहादूर जफर जंग कोकलताश

- वह औरंगजेब का सौतेला दूधभाई था। फरवरी १६७२ में, वह साल्हेर की लड़ाई में एक सैन्य कमांडर बना। उसने पेडगाँव में अपना मुख्यालय स्थापित किया।
- जुलाई १६७५ के आसपास ७ हजारी बरहानपुर का सूबेदार बना। १६८१ में जब बहादुर खां अपने भांजे की शादी में गया तो अभी-अभी राजा बने संभाजी महाराज ने राज्य को वित्त प्राप्त करने के लिए सूरत को लूटने की अफवाह फैलाकर बरहानपुर पर हमला किया गया और लूट लिया।

बहादूर खान कोकलताश की लाहोर स्थित कबर

खान-ए-जहां बहादूर जफर जंग कोकलताश

- ❖ स्वयं औरंगजेब के दक्षिण में आने का फजीती का अभियान भी कारण था।
- ❖ औरंगजेब ने बुरहानपुर की उसकी सूबेदारी को भंग कर दिया। कल्याण का सूबेदार बनाकर अपनी नाखुशी जाहिर की।
- ❖ १६८३ में मराठों को हराने के बाद बहादुर खान ने कल्याण पर कब्जा कर लिया।
- ❖ छह साल से रामसेज किला जीतने के लिए किए युद्ध में काले जादू के प्रयास भी विफल रहा।
- ❖ १६९१ में उसे लाहौर भेजा गया। उसका लाहौर में निधन हो गया। (२३ नवम्बर १६९७)
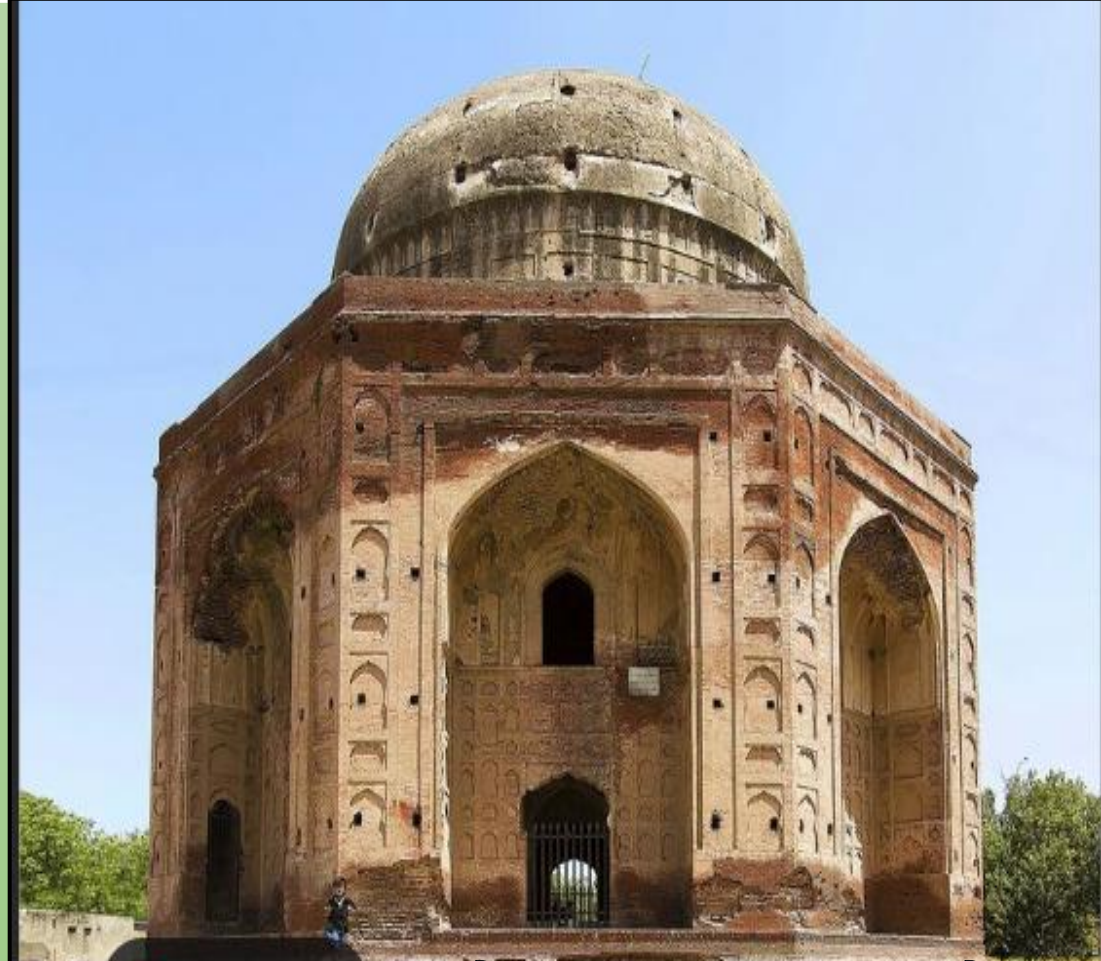
बहादूर खान कोकलताश का लाहोर स्थित मकबरा

निष्कर्ष

- इस घटना के बाद शिवाजी महाराज ने दक्षिण कर्नाटक दिग्विजय की तैयारी शुरू कर दी।
- इस लूट में मिले भारी कपड़े, उपहार, और २०० अरब घोड़ों का उपयोग कुतुब शाह को हडे उपहर देकर मना लिया ।तमिलनाडू स्थित जिंजी किले तक रास्ते में कई राजे रजवाडों को सद्भावना उपहार के रूप में भेंट करने के लिए किया गया ।
- कई मंदिर, वकील और मध्यस्थ मैत्री संधियों पर हस्ताक्षर करने के लिए एकत्र हुए, और मंदिर के पुजारियों को भारी कपड़े, सिक्कों की मूल्यवान थाल में भेंट की गईं।